2 नवम्बर 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अशान्त चित्त व्यक्ति कोई भी कार्य सही रूप में एवं सफलता पूर्वक नहीं कर सकता है, फिर धर्म की साधना और आत्मा की आराधना तो दूर की बातें है।

धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-42

वर्ष : 32, अंक : 15 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष ह्न

महाराष्ट्र व कर्नाटक में भी डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के हीरक जयन्ती वर्ष की घोषणा से सम्पूर्ण भारत के जैन समाज में प्रसन्नता की लहर फैल रही है और अनेक स्थानों पर आपकी हीरक जयन्ती मनाई जा रही है। इसी क्रम में बुधवार, दिनांक २१ अक्टूबर २००९ को कोल्हापुर (महा.) एवं २३ अक्टूबर २००९ को बेलगांव (कर्नाटक) में आपका हीरक जयन्ती समारोह अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि दिनांक २० व २१ अक्टूबर को कोल्हापुर में डॉ.भारिल्लजी ने यहाँ दो प्रवचनों में सम्पूर्ण समयसार का सार अत्यंत सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे वहाँ के श्रोतागण भावविभोर हो गये। बेलगांव में २२ व २३ अक्टूबर को णमोकार महामंत्र एवं आत्मा-परमात्मा विषय पर अत्यंत मार्मिक प्रवचन हुये, जिसे सुनकर सभी श्रोताओं ने कहा कि णमोकारमंत्र का ऐसा अर्थ व मर्म अभी तक जीवन में हमने कभी नहीं सुना।

1. कोल्हापुर (महा.) : यहाँ दिगम्बर जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा, कोल्हापुर के तत्त्वावधान में बुधवार, दिनांक 21 अक्टूबर 2009 को रात्रि में डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल के हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर उनके द्वारा जिनवाणी के प्रचार प्रसार में किये गये कार्यों का सत्कार समारोह अत्यंत हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कैलाशचन्दजी बड़जात्या (पूर्व सेक्रेटरी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में कोल्हापुर के प्रसिद्ध व्यापारी श्री अरविन्द जैन व श्री सुभाषजी भोजे उपस्थित थे। सभा के प्रारंभ में सर्वप्रथम सर्वोदय समिति के अध्यक्ष श्री शान्तिनाथ खोत ने कहा कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र में जो आध्यात्मिक तत्वज्ञान का प्रचार-प्रसार दिखाई दे रहा है, उसका मूल श्रेय डॉ.भारिल्ल साहब को ही जाता है; क्योंकि वे स्वयं तो समय-समय पर पधारते ही हैं , उनका साहित्य व प्रवचनों की कैसेट्स -सीडी भी घर-घर पहुँच चुकी है। उनके ही सुयोग्य शिष्य पण्डित जिनचन्दजी अलमान है जिनके निमित्त से तो यहाँ महती धर्मप्रभावना हो रही है।

तत्पश्चात पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने उनके समग्र व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके द्वारा जैनदर्शन के अनेक महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर विवेचन तो हुआ ही है; लेकिन उनके वक्तव्यों में अनेकों बार यह सुनने को मिलता है कि इस गंभीर विषय पर मुझे अपना स्पष्ट चिंतन प्रस्तुत करना है; अत: हम चाहते हैं कि वह सब शीघ्रातिशीघ्र हमारे सामने आवें तो जैन समाज का सौभाग्य होगा। श्री टोडरमल महाविद्यालय के वहाँ उपस्थित छात्रों के प्रतिनिधि के रूप में पण्डित अनिल अलमान, पण्डित प्रसन्न शेटे, पण्डित अभिनन्दन पाटील, पण्डित अभिजीत अलगोंडर तथा ध्रुवधाम बाँसवाड़ा के पण्डित सनत खोत ने अपने गुरुवर्य से प्राप्त तत्वज्ञान के कारण उनका उपकार स्मरण करते हुए उन्हीं की तरह आजीवन तत्वज्ञान के प्रचार-प्रसार करने की प्रतिज्ञा की। मुख्य अतिथि श्री सुभाषजी भोजे ने कहा कि आचार्य शांतिसागरजी एवं आचार्य समंतभद्रजी महाराज की प्रेरणा से हमने गृहीत मिथ्यात्व का त्याग तो कर दिया था; लेकिन जैन धर्म का असली मर्म डॉ. साहब के साहित्य के माध्यम से ही हमने प्राप्त किया है, इसके लिये उनका जितना उपकार माना जाये वह कम है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री कैलाशचन्दजी ने कहा कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट संपूर्ण विश्व में जैनदर्शन के मूल सिद्धांतों का जो इतना व्यापक प्रचार-प्रसार कर रहा है, उसका पूरा श्रेय यदि किसी को है तो वह डॉ.भारिल्लजी को है। श्री टोडरमल महाविद्यालय प्रारंभ करके तो आपने चैतन्य हीरों की फैक्ट्री खोल दी है, उसी में तराशे हुये एक रत्न हमें प्राप्त हुआ है पण्डित जिनचन्दजी आलमान। यदि वह रत्न इतना सुंदर है तो उसका शिल्पी कितना सुंदर होगा इसकी हम कल्पना कर सकते हैं?

सत्कारमूर्ति डॉ. भारिल्ल साहब का छात्रों के प्रतिनिधि के रूप में पण्डित शीतल हेरवाडे शास्त्री ने तिलक, सर्वोदय समिति के कर्मठ कार्यकर्ता श्री गंगाई सर ने श्रीफल, श्री अरविन्द जैन ने माल्यार्पण, समिति के कार्याध्यक्ष श्री बालासाहेब बसवाडे ने स्मृति चिह्न एवं श्री कैलाशचंदजी ने सम्मानपत्र भेंट कर अभिनंदन किया।

कार्यक्रम के संचालक पण्डित जिनचंदजी आलमान ने सम्मानपत्र का वाचन करते हुये कहा कि डॉ.साहब को समाज द्वारा प्रदत्त उपाधियों का मात्र उल्लेख करेंगे तो घंटों लगेंगे; लेकिन सभी उपाधियाँ उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व के सामने अत्यंत छोटी है।

श्रीमती गुणमालाजी को सौ.इन्दुमति खेमलापुरे ने कुमकुमतिलक, सौ.विद्या गंगाई ने माल्यार्पण एवं श्री कैलाशचंदजी की धर्मपत्नी ने श्रीफल व शॉल भेंट कर अभिनंदन किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु.परिणति पाटील ने तथा स्वागत गीत सौ. मीनल जैन ने प्रस्तुत किया। **– पण्डित भरत शास्त्री**

2. बेलगांव (कर्नाटक) : सकल जैन समाज की ओर से जैन युवक मंडल बेलगांव द्वारा डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल का अमृत महोत्सव समारंभ (हीरक जयन्ती) शुक्रवार, दिनांक 23 अक्टूबर 2009 को रात्रि में अत्यंत उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सेवानिवृत्त जिला न्यायाधीश श्री जिनदत्त देसाई ने की। मुख्य अतिथि प्रमुख उद्योगपति श्री गोपाल जिनगोडा एवं विशेष अतिथि सेवानिवृत्त सेल्स टेक्स कमिश्नर श्री बी.पी.मुत्तिन थे। इनके साथ ही जैन युवक मंडल के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री बालासाहेब पाटील, रमेश शहा, सुधीर पाटील, राजू दोड्डण्णावर, प्रकाश उपाध्ये, राजेन्द्र जैन एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील मंचासीन थे।

अतिथियों के स्वागत एवं कु.परिणति पाटील द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण के पश्चात् जैन युवक मंडल के सक्रिय ट्रस्टी श्री राम कस्तूरी ने डॉ.साहब का संक्षिप्त परिचय देते हुये बेलगांव में उनके निमित्त से हुये कार्यों की जानकारी दी। तत्पश्चात अनेक अतिथियों ने उनके गौरवार्थ अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कन्नड़ आत्मधर्म की सम्पादिका विदुषी धवलश्री पाटील ने अपने कन्नड़ भाषा में दिये वक्तव्य में कहा कि सत्कार तो ज्ञान व चारित्र का होना चाहिये। उसमें भी ज्ञान का विशेष महत्व है, क्योंकि ज्ञान के बिना चारित्र सुगंध के बिना फूल की तरह है। डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का सच्चा सत्कार तभी कहलाएगा जब हम उनके विलक्षण क्षयोपशम ज्ञान के निदर्शक क्रमबद्धपर्याय, निमित्तोपादान, नयचक्र, धर्म के दशलक्षण आदि विशिष्ट जैन सिद्धांतों को अपने जीवन में श्रद्धापूर्वक स्वीकार करेंगे। हम अज्ञानी, पुद्गल का तो सत्कार कर सकते हैं; लेकिन उनके अथाह ज्ञान का सत्कार करना हमारे लिये संभव नहीं है।

बेलगांव के प्रसिद्ध व्यापारी एवं समाजसेवक श्री राजेन्द्र जैन ने कहा कि स्थानकवासी परम्परा में मैं अनेक वर्षों से स्वाध्याय कर रहा हूँ; लेकिन णमोकार मंत्र का जैसा मर्म आपसे सुनने को मिला वह अनेक साधु–संतों से भी हमें प्राप्त नहीं हुआ था। आपका सत्कार करने का अवसर हमें मिल रहा है सह हमारा सौभाग्य है। आप शतायु हों और हमें पुन: इसी प्रकार आपका शताब्दि महोत्सव मनाने का सुअवसर मिले।

रिटायर्ड सेल्स टैक्स कमिश्नर श्री बी.पी.मुत्तिन ने अंग्रेजी में अपना वक्तव्य देते हुये कहा कि आपकी 50 से भी अधिक पुस्तकें 42 लाख की संख्या में आठ भाषाओं में जन–जन तक पहुँच चुकी है यह आपके व्यक्तित्व की विशालता को प्रदर्शित करता है।

रिटायर्ड जिला न्यायाधीश श्री जिनदत्त देसाई ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आप जैसे महापुरुष के सत्कार समारंभ की अध्यक्षता करने की योग्यता मुझमें कहाँ है ? लेकिन यह पद मुझे इसलिये मिला है कि मैं आपसे सिर्फ उम्र में दो वर्ष बड़ा हूँ। आप महान हैं क्योंकि आपका कार्य महान है। कुन्दकुन्दादि आचार्यों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का विषय हम जैसे सामान्य ज्ञानवालों को अत्यंत कठिन लगता था; लेकिन डॉ. भारिल्ल साहब ने अपने लेखन व प्रभावशाली प्रवचनों से उसे इतना सरल कर दिया है कि वह अब जन–जन के समझ में आने लगा है। स्वकल्याण तो सभी कर सकते हैं; लेकिन जिस तरह से जनहित व लोकहित के कार्यों में आप समर्पित हैं, ऐसा व्यक्तित्व दुर्लभ है। आप चिरायु हों एवं इसी तरह स्व–पर कल्याण करें ऐसी हम सबकी हार्दिक शुभेच्छा है।

सन्मान्य डॉ.भारिल्लजी को श्री राजेन्द्र जैन ने तिलक, श्री बालासाहेब पाटील ने मैसूरी पगड़ी, श्री गोपाल जिनगोडा ने माल्यार्पण, श्री सुधीर पाटील ने शॉल, श्री सुहास मोहिरे ने फलों का स्तबक एवं जिनदत्त देसाई ने मानपत्र प्रदान कर सत्कार किया। मानपत्र प्रदान करने से पूर्व इसका वाचन गृहमंत्रालय में राजभाषा विभाग के केन्द्र प्रभारी प्राध्यापक डॉ.जयशंकर यादव बनारसवालों ने किया। उन्होंने ही यह मानपत्र बनाया था। कार्यक्रम का सफल संचालन भी इन्होंने ही किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का भी कुमकुम तिलक सौ.जिनदत्त देसाई, माल्यार्पण सौ.सुनन्दा रमेश चिवरे एवं श्रीफल व साड़ी सौ.मंगला रमेश

शहा ने प्रदान कर सम्मानित किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री महावीर पत्रावले व राशि चिवरे का महत्वपूर्ण योगदान रहा। ●

भूल सुधार

दिनांक 4 अक्टूबर को जयपुर में आयोजित डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अभिनंदन समारोह में आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली की ओर से उक्त ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अजितप्रसादजी जैन एवं श्री आदीशजी जैन, दिल्ली ने डॉ.भारिल्ल का स्वागत व अभिनंदन किया था। विगत अंक में प्रकाशित हीरक जयन्ती के समाचार में उक्त नाम का उल्लेख करना भूल से छूट गया था; दिल्ली के जिन महानुभाव ने हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित किया हम उनके आभारी हैं।

सम्पादकीय – 39

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जिनका आचरण मूलगुणों और उत्तरगुणों को उत्कृष्ट भावों से धारण करने का है, वे भावश्रमण हैं। उनका चिन्तन ऐसा होता है कि ह्न

'एगो मे सस्सदो अप्पा, णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।

अर्थात् मेरा आत्मा ज्ञान–दर्शन लक्षणरूप शाश्वत और एक ही है। शेष भाव मुझसे बाह्य हैं; वे सब ही संयोग लक्षणस्वरूप हैं, परद्रव्य हैं।'

वस्त्र धारण के संबंध में कहते हैं कि वस्त्र के मलिन हो जाने पर उसको धोने के लिए जल एवं साबुन आदि का आरम्भ करना पड़ता है और इस अवस्था में संयम का घात होना अवश्यम्भावी है। वस्त्र के नष्ट होने पर पुरुषों का मन व्याकुल हो जाता है, दूसरों से उसको प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करनी पड़ती है। इसलिए मुनिजन सदा पवित्र एवं रागभाव को दूर करने के लिए दिग्मण्डलरूप अविनश्वर वस्त्र का आश्रय लेते हैं।

द्रव्य–भावलिंग में भावलिंग प्रधान है; क्योंकि भावलिंग साक्षात् मोक्ष का कारण है। बाह्य द्रव्यलिंग होने पर भी यदि भावलिंग न हो तो मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती और अन्तरंग भावलिंग हो; किन्तु द्रव्यलिंग न हो ह्न ऐसा तीन काल में कभी होता ही नहीं है।

आगम में स्पष्ट लिखा है कि ह्न **'भावसमणा हु समणा' ह्न** जो भाव–श्रमण हैं, वे ही श्रमण हैं, अन्य नहीं। 'भावलिंग ही प्रथमलिंग है, इसलिए हे भव्य जीव! तू द्रव्यलिंग को परमार्थभूत मत जान! गुण–दोष का कारणभूत भाव ही है ह्न ऐसा जिनेन्द्र भगवान कहते हैं।'

'भाव ही स्वर्ग–मोक्ष का कारण है; भाव से रहित श्रमण पापस्वरूप है, तिर्यंचगति का स्थानक है तथा कर्ममल से मलिन चित्तवाला है।'

'जो भावश्रमण हैं, वे परम्परा से कल्याण स्वरूप हैं ह्न तथा जो द्रव्यश्रमण हैं, वे मनुष्य, देव आदि योनियों में दुःख पाते हैं।'

'सम्यग्दर्शनरहित मुनिदीक्षा धारण करना व्यर्थ है, इससे मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती।'

'जो जीव परब्रह्म को नहीं जानता है और जो सम्यग्दर्शन से रहित है, वह न तो गृहस्थ अवस्था में है और न साधु अवस्था में है। केवल बाह्य लिंग को धारण कर क्या कर सकते हैं ? कर्मों का नाश तो सम्यक्त्वसहित चारित्ररूप जिनलिंग धारण करने से ही होता है।'

'जो सम्यग्दर्शनसहित निर्ग्रन्थरूप है, वही निर्ग्रन्थ है।'

'आप्त, आगम के द्वारा निरूपित पदार्थों के स्वरूप में जिस जीव के श्रद्धा उत्पन्न नहीं हुई है तथा जिसका चित्त मूढ़ताओं से व्याप्त है, उसके संयम की उत्पत्ति नहीं हो सकती। भले प्रकार ज्ञान और श्रद्धान कर जो यमसहित है, उसे संयत कहते हैं। संयत शब्द की इसप्रकार व्युत्पत्ति करने से यह जाना जाता है कि यहाँ पर द्रव्यसंयम का प्रकरण नहीं है।'

द्रव्यलिंग की गौणता –

'बहुत प्रकार के मुनिलिंगों अथवा गृहीलिंगों को ग्रहण करके मूढ़ अज्ञानीजन यह कहते हैं कि **'यह लिंग मोक्षमार्ग है'; परन्तु लिंग मोक्षमार्ग नहीं है; क्योंकि अरहन्तदेव देह के प्रति निर्ममत्व वर्तते हुए लिंग को छोड़कर दर्शन–ज्ञान–चारित्र का सेवन करते हैं;** अतः मुनियों और गृहस्थों के लिंग मोक्षमार्ग नहीं हैं।'

जो संयमरहित जिनलिंग धारण करता है, वह सब निष्फल है।

'जैसी बोधि–समाधि जिनमार्ग में कही है, वैसी बोधि–समाधि द्रव्यलिंगी साधु नहीं पाता है।'

'लिंग शरीर के आश्रित है और शरीर ही आत्मा का संसार है, इसलिए जिनको लिंग का ही आग्रह है, वे संसार से नहीं छूटते।'

'शरीर आत्मा से भिन्न है और लिंग शरीरस्वरूप है, इसलिए आत्मा से भिन्न होने के कारण निश्चयनय से लिंग मोक्ष का कारण नहीं है।'

'हे मुने! तू लोक का रंजन करनेवाला बाह्यव्रत का वेष मत धारण कर! मोक्ष का मार्ग भाव ही से है, इसलिए तू भाव ही को परमार्थभूत जानकर अंगीकार करना। केवल द्रव्यमात्र से क्या साध्य है?'

जहाँ न्यूनतम तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप भावलिंग होता है, वहाँ तो शरीर की नग्नदशा, बाह्य मूलगुणादि का पालन इत्यादिरूप द्रव्यलिंग होता ही है; परन्तु जहाँ द्रव्यलिंग होता है, वहाँ भावलिंग भी हो ही ह्न ऐसा नियम नहीं है।

यहाँ मुनिव्रत से आशय भावलिंग रहित मात्र बाह्य द्रव्यलिंग समझना चाहिए; क्योंकि भावलिंग सहित द्रव्यलिंग का धारण अनन्तबार नहीं हो सकता; इसका कारण यह है कि जिसे भावलिंगपूर्वक द्रव्यलिंग होता है, उस जीव का संसार अति अल्प होता है।

भावलिंग की महिमा ह्न

'बहिरंग द्रव्यलिंग के होने पर भावलिंग होता भी है और नहीं भी होता, कोई नियम नहीं है; परन्तु अभ्यन्तर भावलिंग के होने पर सर्वसंग के त्यागरूप बहिरंग द्रव्यलिंग अवश्य होता ही है।'

'मुनि लिंग धारै बिना तो मोक्ष न होय; परन्तु मुनि लिंग धारै मोक्ष होय भी अर नाहीं भी होय।'

इस कथन से स्पष्ट है कि द्रव्यलिंग का भी अपना महत्त्व है। बिना द्रव्यलिंग के किसी जीव को भावलिंग प्रगट हो जाए ह्न ऐसा कदापि सम्भव नहीं है; किन्तु द्रव्यलिंग से भावलिंग हो ही जाएगा ह्न यह बात भी नहीं है।

दूसरी बात यह भी है तीर्थंकर भी जब तक गृहस्थ दशा में रहते हैं, तब तक मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते है। मुक्ति के लिए तो एकमात्र निर्ग्रन्थ दिगम्बर द्रव्यलिंग ही स्वीकार है। बात इतनी–सी है कि **'द्रव्यलिंग शरीराश्रित होने से उसके प्रति ममत्व त्यागने योग्य है।'** इस बात का छल ग्रहण करके, बाह्य द्रव्यलिंग का ही निषेध करके किसी भी बाह्य लिंग से मोक्ष प्राप्ति माननेवालों को आचार्य कुन्दकुन्द के निम्न कथनों पर ध्यान देना चाहिए ह्न **'जिनशासन में इस प्रकार कहा है कि 'वस्त्र को धारण करनेवाला सीझता नहीं है, मोक्ष नहीं पाता है। यदि तीर्थंकर भी हो तो जब तक गृहस्थ में रहे, तब तक मोक्ष नहीं पाता है; दीक्षा लेकर दिगम्बररूप धारण करे, तब मोक्ष पावे; क्योंकि नग्नपना ही मोक्षमार्ग है, शेष सब लिंग उन्मार्ग हैं।'**

'जो निश्चेल (वस्त्ररहित) दिगम्बर मुद्रा और पाणिपात्र में खड़े–खड़े आहार करना, आदि अद्वितीय मोक्षमार्ग का उपदेश तीर्थंकर ने दिया है,

इसके सिवाय अन्य रीति सब अमार्ग है।'

'हे शिष्य ! द्रव्यलिंग निषिद्ध ही है ह्न ऐसा तू मत जान; क्योंकि यहाँ तो भावलिंग से रहित यतियों को द्रव्यलिंग निषिद्ध कहा गया है। वस्तुत: भावलिंग रहित द्रव्यलिंग निषिद्ध है।

दीक्षा के बाद दो घड़ीकाल में ही भरत चक्रवर्ती ने केवलज्ञान प्राप्त किया है, उन्होंने भी निर्ग्रन्थरूप से ही केवलज्ञान प्राप्त किया है; परन्तु समय बहुत कम होने के कारण उनका परिग्रह त्याग लोग जानते नहीं हैं।'

भरतेश्वर ने पहले जिनदीक्षा धारण की, केश लुंचन किये, हिंसादि पापों की निवृत्तिरूप पंच महाव्रत आदरे। फिर अन्तर्मुहूर्त में निज शुद्धात्मा के ध्यान में ठहरकर निर्विकल्प हुए। तब अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त किया; परन्तु इस सबका समय कम है, इसलिए महाव्रत की प्रसिद्धि नहीं हुई।'

पण्डित टोडरमलजी ने मुक्ति के कारणों की चर्चा में कहा है ह्न 'मुनिलिंग धारण किये बिना तो किसी को मोक्ष नहीं होता, परन्तु मुनिलिंग धारण करने पर मोक्ष होता भी है और नहीं भी होता।'

गुणस्थानानुसार छठवें से आगे–आगे के गुणस्थानों में बढ़ती हुई शुद्धता को भावलिंग के भेद कह सकते हैं; लेकिन छठवें से चौदहवें गुणस्थान तक बाह्य नग्न दिगम्बर द्रव्यलिंग तो एक ही प्रकार का होता है।

छठवें से नीचे के गुणस्थानों की अपेक्षा द्रव्यलिंग के चार भेद हैं ह्न (१) प्रथम गुणस्थानवर्ती मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मुनि (२) चतुर्थगुण–स्थानवर्ती द्रव्यलिंगी मुनि और (३) पंचमगुणस्थानवर्ती द्रव्यलिंगी मुनि तथा (४) छठवें–सातवें गुणस्थानवर्ती भावलिंग सहित द्रव्यलिंगी मुनि।

उक्त भेदों में चौथे–पाँचवें गुणस्थानवर्ती द्रव्यलिंगी मुनि यद्यपि मोक्षमार्गी हैं, तथापि वे भावलिंगी मुनि नहीं हैं और मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मुनि भी कदाचित् अपनी निर्दोष चर्या के कारण पूजनीय होने पर भी प्रशंसनीय नहीं हैं। वे तो अविरत सम्यग्दृष्टि से भी हीन कहे गये हैं।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी की पहचान ह्न

जिनका बाह्य वेष तो नग्न दिगम्बर होता है; परन्तु जो अपनी स्वेच्छाचारी प्रवृत्तियों से जिनशासन को कलंकित करते हैं, उन्हें आगम में पापश्रमण, नटश्रमण, पार्श्वस्थ, आदि नामों से तिरस्कृत किया गया है, वे कदापि पूजनीय नहीं हैं।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी, सम्यक्दृष्टि गृहस्थ से भी हीन हैं ह्न इस सम्बन्ध में रत्नकरण्ड श्रावाकाचार में कहा है ह्न

'गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो नैव मोहवान्।
अनगारो गृही श्रेयान् निर्मोही मोहिनो मुने।।३३।।

दर्शनमोहरहित गृहस्थ तो मोक्षमार्ग में स्थित है; किन्तु मोहवान् मिथ्यादृष्टि मुनि मोक्षमार्ग में स्थित नहीं है। इसकारण मोही मुनि से निर्मोही सम्यग्दृष्टि गृहस्थ श्रेष्ठ है।'

इसी सन्दर्भ में आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा प्रस्तुत शंका समाधान भी दृष्टव्य है, जो इस प्रकार है ह्न '**यहाँ कोई कहे कि** असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि के कषायों की प्रवृत्ति विशेष है और मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मुनि को थोड़ी है; इसी से असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि तो सोलहवें स्वर्गपर्यंत ही जाते हैं और मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी अन्तिम ग्रैवेयकपर्यन्त जाता है। इसलिए भावलिंगी मुनि से तो द्रव्यलिंगी को हीन कहो, उसे असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि से हीन कैसे कहा जाये?'

समाधान ह्न 'असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि के कषायों की प्रवृत्ति तो है; परन्तु श्रद्धान में किसी भी कषाय के करने का अभिप्राय नहीं है तथा द्रव्यलिंगी के शुभकषाय करने का अभिप्राय पाया जाता है, श्रद्धान में उन्हें भला जानता है; इसलिए श्रद्धान की अपेक्षा असंयत सम्यग्दृष्टि से भी इसके अधिक कषाय है।

द्रव्यलिंगी के योगों की प्रवृत्ति शुभरूप बहुत होती है और अघातिकर्मों में पुण्य–पापबन्ध का विशेष शुभ–अशुभ योगों के अनुसार होता है, इसलिए वह अन्तिम ग्रैवेयकपर्यन्त पहुँचता है; परन्तु वह कुछ कार्यकारी नहीं है; क्योंकि अघातियाकर्म आत्मगुण के घातक नहीं हैं, उनके उदय से उच्च–नीचपद प्राप्त किये तो क्या हुआ? वे तो बाह्य संयोगमात्र संसारदशा के स्वांग हैं। आप तो आत्मा है; इसलिए आत्मगुण के घातक जो घातियाकर्म हैं, उनकी हीनता ही कार्यकारी है।

घातियाकर्मों का बन्ध बाह्यप्रवृत्ति के अनुसार नहीं है, अन्तरंग कषायशक्ति के अनुसार है; इसीलिए द्रव्यलिंगी की अपेक्षा असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि के घातिकर्मों का बन्ध थोड़ा है। द्रव्यलिंगी के तो सर्व घातिकर्मों का बन्ध बहुत स्थिति–अनुभाग सहित होता है और असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि के मिथ्यात्व–अनन्तानुबन्धी आदि कर्मों का तो बन्ध है ही नहीं, अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यान कषाय चौकड़ी का बन्ध होता है, वह अल्पस्थिति–अनुभाग सहित होता है।

तथा द्रव्यलिंगी के कदापि गुणश्रेणी निर्जरा नहीं होती, सम्यग्दृष्टि के कदाचित् होती है और देश व सकलसंयम होने पर निरन्तर होती है। इसी से यह मोक्षमार्गी हुआ है। इसलिए द्रव्यलिंगी मुनि को शास्त्र में असंयत व देशसंयत सम्यग्दृष्टि से हीन कहा है।

समयसार शास्त्र में द्रव्यलिंगी मुनि की हीनता गाथा, टीका और कलशों में प्रगट की है तथा पंचास्तिकाय टीका में जहाँ केवल व्यवहारावलम्बी का कथन किया है, वहाँ व्यवहार पंचाचार होने पर भी उसकी हीनता ही प्रगट की है तथा प्रवचनसार में द्रव्यलिंगी को संसारतत्त्व कहा है। द्रव्यलिंगी के जो जप, तप, शील, संयमादि क्रियाएँ पायीं जाती हैं, उन्हें परमात्मप्रकाशादि अन्य शास्त्रों में भी जहाँ–तहाँ अकार्यकारी बतलाया है, सो वहाँ देख लेना।'

'सम्यक्त्वरहित द्रव्यलिंग सर्वथा निषेध योग्य है; क्योंकि वह एकमात्र संसार का ही कारण है; लेकिन सम्यक्त्वसहित चौथे–पाँचवें गुणस्थानवाला द्रव्यलिंगी यद्यपि पूर्ण चारित्र से च्युत है, फिर भी सम्यक्त्व और देशचारित्र से युक्त है, अतः अपनी कमजोरी को मानता है और उसे अल्पकाल में ही सच्चा मुनिपना भी होगा ह्न यह भी निश्चित है; अतः सम्यक्त्व सहित द्रव्यलिंग सर्वथा निषेध योग्य नहीं कहा है।'

द्रव्यलिंग वास्तव में मोक्षमार्ग नहीं है; क्योंकि वह शरीराश्रित होने से परद्रव्य है। दर्शन–ज्ञान–चारित्र ही मोक्षमार्ग है; क्योंकि वह आत्माश्रित होने से स्वद्रव्य है। इसलिए समस्त द्रव्यलिंगों का त्याग करके, दर्शन–ज्ञान–चारित्रस्वरूप मोक्षमार्ग में आत्मा को लगाना योग्य है।'

'यहाँ मुनि–श्रावक के व्रत छुड़ाने का उपदेश नहीं है, जो केवल द्रव्यलिंग को ही मोक्षमार्ग मानकर वेष धारण करते हैं, उनको द्रव्यलिंग का पक्ष छुड़ाया है, क्योंकि वेषमात्र से मोक्ष नहीं है।' **(क्रमश:)**

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 39

नौवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मुनिराज पार्श्व पर कोई बड़ा संकट नहीं था ह्न यह बात धरणेन्द्र-पद्मावती भी अच्छी तरह जानते होंगे; क्योंकि आखिर वे मुनिराज पार्श्व के भक्त थे। इसलिए हम कह सकते हैं कि उन्होंने मुनिराज पार्श्व की रक्षा नहीं की थी, अपितु उस कमठ के जीव को ही महान पाप करने से विरत किया था। वस्तुत: बात यह है कि उन्होंने उपकार मुनिराज पार्श्व का नहीं, कमठ के जीव का किया है। उन्हें कमठ पर करुणा आई और उन्होंने उसे नरक, निगोद ले जानेवाले महान पाप से बचा लिया।

सोचने का यह भी एक दृष्टिकोण हो सकता है। जो भी हो, पर यह सुनिश्चित है कि छठवें गुणस्थान के नीचे के जीवों की अष्टद्रव्य से पूजन करने को यहाँ गृहीत मिथ्यात्व कहा गया है और तत्संबंधी मान्यता को कुदेव संबंधी मान्यता माना गया है।

वस्तुत: स्थिति तो यह है कि आप किसी को भी अपने सुख-दु:ख और जीवन-मरण का कर्ता-धर्ता मानकर पूजोगे तो वह कुदेव संबंधी गृहीत मिथ्यात्व होगा; क्योंकि प्रत्येक जीव के सुख-दु:ख, जीवन-मरण आदि स्वयं की तत्समय की योग्यता और स्वयं के पुण्य-पाप के उदयानुसार होते हैं। **यदि हमारे पाप का उदय है और हमारा बुरा होना है तो संसार की कोई भी शक्ति बचा नहीं सकती। इसीप्रकार हमारी होनहार अच्छी है और तदनुसार पुण्य का उदय भी है तो दुनिया की कोई भी शक्ति हमारा बुरा नहीं कर सकती।**

यदि हम इस परम सत्य से परिचित हैं तो फिर हमें किसी भी प्रकार के भय, स्नेह, आशा और लोभ से किसी रागी-द्वेषी देवी-देवता की आराधना करने की आवश्यकता नहीं है ह्न इस सम्पूर्ण प्रकरण का यही संदेश है।

यहाँ पर प्रश्न किया जा सकता है कि जब कोई किसी का कुछ कर ही नहीं सकता; यहाँ तक कि अरहंत भगवान भी किसी का भला-बुरा नहीं करते तो फिर हम उनकी भक्ति क्यों करें?

अरे भाई ! भक्ति तो पंचपरमेष्ठी के गुणों में होनेवाले अनुराग को कहते हैं। कहा भी है ह्न **'गुणेषु अनुराग: भक्ति:** ह्न गुणों में होनेवाले अनुराग को भक्ति कहते हैं।'

यदि किसी व्यक्ति में हम से अधिक गुण हैं तो उस व्यक्ति के प्रति हमारे हृदय में सहज ही अनुराग उत्पन्न होता। उक्त अनुराग को ही लोक में भक्ति कहते हैं। यदि वही अनुराग पंचपरमेष्ठी के गुणों के आधार पर उनमें हो तो, उसे जिनधर्म में भक्ति कहा जाता है। सच्ची भक्ति मात्र गुणों के आधार पर होती है; उसमें किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं होता, नहीं होना चाहिए।

एक व्यक्ति क्रिकेट खेलना सीखना चाहता है। इसके लिए उसने एक कोच भी लगाया है, जो उसे प्रतिदिन जेठ की दोपहरी में घंटों अभ्यास कराता है, उसके साथ दौड़ता है, भागता है; पसीने से लथपथ हो जाता है; पर उसने अपने घर में जो चित्र लगाये हैं, उनमें उसका चित्र नहीं है; उसमें तो कपिलदेव का चित्र है, सचिन तेन्दुलकर का चित्र है।

यद्यपि वह अपने कोच की भी विनय रखता है, उनका सम्मान करता है; उन्हें उचित पारिश्रमिक भी देता है; तथापि यह सब उनके द्वारा किये सहयोग के कारण होता है; अत: विनय तो है, पर भक्ति नहीं।

यद्यपि यह परम सत्य है कि उक्त संदर्भ में उसे कपिलदेव या सचिन तेन्दुलकर से कोई सहयोग प्राप्त नहीं है, वे लोग उसके पत्र का भी उत्तर नहीं देते, मिलने का तो सवाल पैदा ही नहीं होता, उनके पास जाने की कोशिश भी करे तो भी पुलिस के डंडे खाने पड़ते हैं, फिर भी घर में चित्र उनके ही लगाये हैं; क्योंकि यह उन जैसा क्रिकेटर बनना चाहता है, अपने कोच जैसा नहीं, जिसका नंबर जिले की टीम में भी नहीं आ पाया।

वे लोग उसके आदर्श हैं, वह उन जैसा बनना चाहता है; अत: उनके प्रति उसके हृदय में सहज ही भक्तिभाव उमड़ता है। जब वे जीतते हैं, तेजी से रन बनाते हैं तो यह उछल पड़ता है; जब वे हारते हैं तो यह उदास हो जाता है। यह सब एकदम निस्वार्थभाव से होता है।

इसीप्रकार जो हमें वस्तुस्वरूप समझाते हैं, पढ़ाते हैं, सिखाते हैं, हमारा सभी प्रकार से पूरा सहयोग करते हैं; हम उन गृहस्थ ज्ञानियों का भी आदर करते हैं, विनय रखते हैं; रखना भी चाहिए; तथापि **हमारे आदर्श तो अरहंत-सिद्ध भगवान ही हैं; पंचपरमेष्ठी ही हैं; हम उन जैसा ही बनना चाहते हैं; इसलिए उनके प्रति हमारे हृदय में सहज ही भक्तिभाव उमड़ता है, उमड़ना भी चाहिए; यही कारण है कि हम उनके मंदिर बनवाते हैं, उनकी प्रतिमायें विराजमान करते हैं, उनकी पूजा-अर्चना करते हैं; वह सबकुछ करते हैं, जो एक सच्चे भक्त को करना चाहिए।**

उनसे हमें कुछ मिलेगा ह्न इस भावना से की गई भक्ति तो व्यापार है, धंधा है; उसमें तो स्वार्थ की दुर्गंध आती है। उनसे कुछ मांगना तो भिखारीपन है। **जिनेन्द्र भगवान के भक्त भिखारी नहीं होते।**

यद्यपि यह सत्य है कि हमें जो कुछ भी मिलता है, अनुकूल-प्रतिकूल संयोग मिलते हैं; वे सब हमारे पुण्य-पापानुसार अपनी पर्यायगत योग्यता से ही प्राप्त होते हैं; तथापि हम जो भगवान से माँगते हैं, वह भी तो हमारे पुण्य-पापानुसार ही मिलेगा। अत: हम यही तो कहते हैं कि यदि हमारे कोई पुण्य शेष हों तो उसके फल में हमें अमुक संयोग प्राप्त हों ह्न **इसमें तो कोई बुरी बात नहीं होना चाहिए। फिर आप हमें ऐसा करने से क्यों रोकते हैं?**

अरे भाई ! आप यह भी तो सोचिये कि यदि बुरी बात नहीं होती तो फिर हम क्यों रोकते ? अरे भाई ! यह निदान नामक आर्तध्यान है, जिसका फल शास्त्रों में तिर्यंचगति की प्राप्ति होना बताया गया है।

यह तो आप जानते ही हैं कि तिर्यंचगति में निगोद भी शामिल है।

हमारी भक्ति तो निष्काम भाव से होना चाहिए। जिसप्रकार वह क्रिकेट सीखने का अभिलाषी बिना किसी आकांक्षा से मात्र भक्तिभाव से ही कपिलदेव और तेन्दुलकर का प्रशंसक है; उसीप्रकार हमें भी भगवान से बिना कुछ माँगे उनकी भक्ति का भाव आना चाहिए।

जिन लोगों को यह चिन्ता है कि यदि हम ऐसा कहेंगे कि भगवान किसी से कुछ लेते नहीं है और किसी को कुछ देते भी नहीं हैं तो फिर कौन करेगा भगवान की भक्ति, कौन देगा दान, कौन बनवायेगा मंदिर ह्न ये सभी धर्म काम चलेंगे कैसे ?

यदि हम चाहते हैं कि ये सभी कार्य चलते रहें तो हमें यह कहना ही होगा कि यदि तुम भगवान की पूजा-भक्ति करोगे, उनका मंदिर बनवाओगे तो तुम्हें धन की, सम्पत्ति की प्राप्ति होगी, स्त्री-पुत्रादि की अनुकूलता प्राप्त होगी। यदि हमने ऐसा नहीं किया तो सबकुछ चौपट हो जावेगा। अत: हमारा तो यही कहना है कि वस्तुस्थिति चाहे जो कुछ भी हो; कृपया उसे पोथियों में ही रहने दीजिए, अकेले में बैठकर आप पण्डित लोग ही समझते रहिये; समाज को तो यही समझाइये कि.....।

ऐसे लोगों से मैं कहना चाहता हूँ कि **हमें समाज चलाना है या आत्मकल्याण करना है; हमें समाज के समक्ष वस्तु के सत्य-स्वरूप को प्रस्तुत करना है या धर्म के नाम पर उनसे चन्दा वसूल करना है, उन्हें क्रियाकाण्ड के बाह्य आडम्बर में उलझाये रखना है। अरे, भाई ! अब वस्तु का सच्चा स्वरूप हमारी समझ में आ गया है, हमारे ध्यान में आ गया है; अत: अब हमसे तो ऐसा अनर्थ होगा नहीं।**

जब लोग वस्तु का सही स्वरूप समझेंगे तो उनके हृदय में भी; उक्त सत्य स्वरूप ह्न जिनकी दिव्यध्वनि में आया है, जिन गुरुओं ने उसे लिपिबद्ध किया है, जिन शास्त्रों में वह लिखा है; उन सबके प्रति अगाधभक्ति का भाव सहज ही उत्पन्न होगा, उन जैसा बनने का भाव भी जाग्रत होगा; न केवल भाव उत्पन्न होगा, अपितु उसके प्रचार-प्रसार के लिए साधन जुटाने का भी तीव्र विकल्प होगा; परिणामस्वरूप जिनमंदिर बनेंगे, स्वाध्याय भवन बनेंगे, शास्त्र छपेंगे, घर-घर पहुँचाये जावेंगे, पूजा-पाठ होगा; वह सबकुछ होगा जो जिनधर्म की प्रभावना के लिए आवश्यक है। कहीं कोई कमी रहनेवाली नहीं है।

इस बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है कि यदि हम भगवान को कर्ता-धर्ता नहीं बतायेंगे तो सबकुछ बर्बाद हो जायेगा।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी ने उदाहरण प्रस्तुत कर इस बात को सिद्ध कर दिया है कि वस्तु के सत्यस्वरूप को प्रस्तुत करने से जिनमंदिरों को कोई खतरा नहीं है; क्योंकि निरन्तर अध्यात्मधारा बहने पर भी उनके यहाँ जितना दान दिया जाता है, जैसी पूजा भक्ति होती है, जितने जिनमंदिर और स्वाध्याय भवन बने हैं, जितने शास्त्र छपे हैं और घर-घर पहुँचे हैं; उनकी तुलना में अन्यत्र जो कुछ भी हुआ है, वह नगण्य ही है, न के बराबर ही है।

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि भले ही भगवान कुछ लेते-देते न हों, पर उनकी पूजा-भक्ति से जो पुण्यबंध होता है; उसके फल में अनुकूलता तो मिलती ही है।

हाँ, यह बात सत्य है कि भगवान की पूजा-भक्ति से पुण्य का बंध होता है और उसके फल में लौकिक अनुकूलता भी प्राप्त होती है; **पर कुछ मांगने से, वह पुण्य बढता नहीं, अपितु कुछ कम हो जाता है, क्षीण हो जाता है; सातिशय पुण्य का बंध तो जैनदर्शन में ज्ञानी जीवों को निष्कामभाव से होनेवाली भक्ति से ही होता है।**

पण्डितजी कहते हैं कि कुदेवादिक के सेवन से जीव का बिगाड़ दो प्रकार से होता है। **एक तो मिथ्यात्वादि दृढ होने से मोक्षमार्ग दुर्लभ हो जाता है और दूसरे पाप का बंध होने से लौकिक प्रतिकूलतायें भी बनी रहती हैं। इसमें सबसे अधिक नुकसानदेह तो मिथ्यात्व का पुष्ट होना ही है; क्योंकि मिथ्यात्व अनंत संसार का कारण है।** (क्रमश:)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 से 17 नवम्बर	गजपंथा	पंचकल्याणक
18 व 19 नवम्बर	बीना	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
20 व 21 नवम्बर	विदिशा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 से 24 नवम्बर	होशंगाबाद	तारण जयन्ती एवं हीरक जयन्ती
25 से 27 नवम्बर	देवलाली	वेदी प्रतिष्ठा
28 नवम्बर	मुम्बई	प्रवचन
29 नवम्बर प्रात:	इन्दौर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
29 नवम्बर सायं	उज्जैन	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 से 28 दिसम्बर	दक्षिण भारत	फैडरेशन यात्रा
29 व 30 दिसम्बर	बैंगलोर	प्रवचन
31 से 4 जन.2010	चैन्नई	व्याख्यानमाला
9 से 10 जनवरी	अहमदाबाद (चैतन्यधाम)	महासमिति सम्मेलन
16 से 17 जनवरी	इन्दौर	विधान
8 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
28 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर एवं हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर

श्री सात बलभद्र एवं आठ करोड़ मुनिराजों की निर्वाण स्थली, गजपंथसिद्धक्षेत्र नासिक (महा.) में ह्न

विश्वशांति महायज्ञ

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(गुरुवार, 12 नवम्बर 2009 से बुधवार 18 नवम्बर 2009 तक)

कार्यक्रम स्थल: गजपंथ सिद्धक्षेत्र, चामरलेन पहाड़, पेठ रोड़, नासिक (महा.)

आत्मार्थी बन्धुवर, सादर जयजिनेंद्र।

आप सभी को बताते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि संसारताप मुक्त सप्त बलभद्र व आठ करोड़ महा मुनिराजों की साधना एवं निर्वाणस्थली श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र पर **आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी** के प्रभावना योग से जीर्णोद्धार द्वारा निर्मित उत्तुंग त्रिशिखरयुक्त भव्य जिनालय में 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी की 51 इंची श्वेत पद्मासन शांतमुद्रा के साथ त्रिकाल चौबीसी एवं विदेह क्षेत्र में विद्यमान श्री सीमंधरादि बीस तीर्थंकरों एवं यहाँ से मुक्ति प्राप्त सप्त बलभद्रों की प्रतिमायें दिनांक 12 नवम्बर से 18 नवम्बर, 2009 तक आयोजित होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान की जायेंगी। महोत्सव के विधिनायक श्री नेमिनाथ भगवान होंगे।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचन्दजी सोनागिरि, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमचन्दजी हेम देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. मुकेशजी शास्त्री तन्मय विदिशा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में विधि–विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित श्री धन्यकुमारजी बेलोकर सम्पन्न करायेंगे। प्रतिष्ठा का कुशल निर्देशन ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं पण्डित अशोकजी लुहाडिया अलीगढ करेंगे।

इस अवसर पर आप सभी को अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार इष्ट–मित्रों सहित पधारने हेतु हमारा भाव–भीना आमंत्रण है।

निवेदक

श्री विश्वशांति महायज्ञ पंचकल्याणक महोत्सव समिति, नासिक (महा.)

अध्यक्ष – **अजित जैन, बड़ौदा** कार्याध्यक्ष – **विजयकुमार बड़जात्या, इंदौर** परामर्शदाता – **वसंतभाई दोशी, मुंबई**

स्वागताध्यक्ष – कमलकुमार बडजात्या दादर, हर्षवर्धन जैन औरंगाबाद महामंत्री – महिपाल ज्ञायक बांसवाड़ा

संयोजक – सुभाषभाई कोटड़िया वापी, किरीटभाई गांधी भायंदर

एवं समस्त पदाधिकारी श्री नेमीनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

संपर्क सूत्र

विश्वशांति महायज्ञ पंचकल्याणक महोत्सव समिति, गजपंथ सिद्धक्षेत्र, नाशिक (महाराष्ट्र)

कुन्दकुन्द भवन प्रभात नगर, म्हसरूल, नासिक–422004 (महा.) फोन: (0253) 2531304. श्री अमरचंद जैन गजपंथा ह्न

मो.9371631304, 9604431304/ श्री सुनीलभाई शाह मुंबई–मो. 9322641198 /श्री भावेशभाई शाह बोरीवली– मो. 9322256018

प्रतिष्ठा महोत्सव की पत्रिका का विमोचन कार्यक्रम

गजपंथा (महा.) : यहाँ दिनांक 19 अक्टूबर को क्षेत्र पर आयोजित होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों** द्वारा सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम डॉ.भारिल्ल ने सोनगढ़ एवं वसंतभाई दोशी ने सम्मेदशिखर की पत्रिकायें लिखीं। तदुपरान्त अनेक महानुभावों ने अनेक महत्वपूर्ण स्थानों एवं व्यक्तियों की पत्रिकाओं का लेखन किया।

इस अवसर पर गजपंथ सिद्ध क्षेत्र का परिचय ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर ने दिया। बसंतभाई दोशी ने शिखरजी प्रकरण के संबंध में अपने विचार रखे। डॉ. भारिल्ल ने अपने भाषण में कहा कि तीर्थक्षेत्रों पर जो मिशन के स्थल बन रहे हैं, वे हमें दि.जैन समाज से तो जोड़ते ही हैं; साथ ही इस बात के भी प्रतीक हैं कि लोक में हमारा भी कुछ अस्तित्व है; क्योंकि वहाँ समग्र जैन समाज बिना बुलाये ही आता है और वह हमारी गतिविधियों से परिचित भी होता है। अन्त में कहा कि इस तीर्थक्षेत्र पर होनेवाला पंचकल्याणक मुमुक्षु समाज में एकता स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

देवलाली में दीपावली महोत्सव

देवलाली (महा.) : यहाँ भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस दीपावली महोत्सव के अवसर पर 15 अक्टूबर से 19 अक्टूबर, 09 तक पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी डी प्रवचनों के साथ ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार कर्त्ताकर्म अधिकार की प्रारंभिक गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं ब्र.हेमचन्दजी हेम के प्रवचनों का भी लाभ मिला। श्रीमती अल्पना भारिल्ल मुम्बई द्वारा ली गयी कक्षाओं की विशेष सराहना हुई।

विधान के समस्त कार्य बाल ब्र.अभिनंदनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना ने संपन्न कराये। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती हीनाबेन शाह परिवार सुपुत्री जयंतीलाल चतुर्भुज कामदार की ओर से किया गया। **-वीनूभाई शाह**

विद्वत्परिषद् पुरस्कार प्रदत्त

जयपुर (राज.) : श्री अखिल भारतवर्षीय दि.जैन विद्वत्परिषद् द्वारा प्रवर्तित 4 राष्ट्रीय पुरस्कार 3 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित सम्मान समारोह में वितरित किये गये। समारोह की अध्यक्षता पद्मश्री महामहोपाध्याय डॉ. सत्यव्रत शास्त्री दिल्ली ने की। जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु **श्री अखिल बंसल**-सम्पादक समन्वय वाणी (पाक्षिक) जयपुर को पण्डित कैलाशचन्द शास्त्री पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही जैनदर्शन में शोध एवं अध्ययन अध्यापन हेतु **डॉ. दामोदर शास्त्री लाडनूँ** को प्रो. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य पुरस्कार, धार्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु **पण्डित शान्तिकुमार पाटील जयपुर** को पण्डित टोडरमल पुरस्कार तथा जैन साहित्य में शोध एवं उत्कृष्ट लेखन हेतु **डॉ. ममता जैन बाँसवाड़ा** को गुरु गोपालदास बरैया पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, डॉ. राजाराम जैन, डॉ. नलिन के. शास्त्री, डॉ. सुदर्शनलाल जैन, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. राजेन्द्र बंसल, डॉ. पी. सी. जैन, डॉ. पी. सी. रांवका तथा डॉ. देव कोठारी की गरिमामय उपस्थिति रही। पुरस्कारस्वरूप प्रत्येक को 5 हजार रू. की धनराशि, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किये गये।

सभा का संचालन महामंत्री डॉ. सत्यप्रकाश जैन ने किया।

विद्वत्संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 2 एवं 3 अक्टूबर को '**डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का साहित्यिक अवदान**' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। संगोष्ठी के चार सत्र हुये, जिनकी अध्यक्षता क्रमश: डॉ. दामोदर शास्त्री, डॉ. राजाराम जैन तथा पद्मश्री डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने की। संगोष्ठी में डॉ. ममता जैन बाँसवाड़ा, डॉ. पी. सी. रांवका जयपुर, डॉ.पी.सी.जैन जयपुर, डॉ. देव कोठारी उदयपुर, डॉ. नलिन के. शास्त्री बोधगया, डॉ. सुदर्शनलाल जैन वाराणसी, डॉ. श्रीयांस सिंघई जयपुर, डॉ. अशोक गोयल शास्त्री दिल्ली तथा डॉ. सत्यप्रकाश जैन दिल्ली ने अपने आलेख वाचन किये। गोष्ठी का संचालन क्रमश: श्री अखिल बंसल एवं डॉ. सत्यप्रकाश जैन ने किया।

कोल्हापुर में ह्न

डॉ. भारिल्ल सत्साहित्य विक्रय केन्द्र

कोल्हापुर में डॉ.भारिल्ल के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के कोल्हापुर, सांगली एवं बेलगांव जिले के कुल 71 स्नातक विद्वानों में से लगभग 35 स्नातक विद्वान उपस्थित थे। सभी ने आजीवन तत्वप्रचार-प्रसार करने का संकल्प तो व्यक्त किया ही साथ ही अपने गुरुवर्य के 75वें (हीरक जयन्ती) वर्ष में प्रवेश के अवसर पर 75 हजार रूपये की राशि डॉ.साहब को समर्पित करने की घोषणा भी की। उसी समय डॉ.भारिल्ल ने यह राशि सर्वोदय ट्रस्ट को प्रदान करते हुये इसके द्वारा सत्साहित्य विक्रय केन्द्र प्रारंभ करने की प्रेरणा दी।

तदनुसार तुरंत ही दिनांक 24 अक्टूबर 09 को **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल सत्साहित्य विक्रय केन्द्र** का उद्घाटन महाविद्यालय के प्रथम सत्र के स्नातक विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के करकमलों से संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कैलाशचन्दजी जैन, समिति के अध्यक्ष श्री शांतिनाथ खोत एवं महामंत्री पण्डित जिनचन्दजी आलमान आदि गणमान्य उपस्थित थे। सभी उपस्थित शिविरार्थियों ने इसकी बहुत प्रशंसा की।

डॉ. भारिल्ल को डी.लिट् की उपाधि

मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ द्वारा डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल को प्रथम दीक्षांत समारोह में दिनांक 28 अक्टूबर 2009 को डी.लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

इसके सचित्र विस्तृत समाचार प्राप्त होने पर अगले अंक में प्रकाशित किये जावेंगे। **-प्रबंध सम्पादक**

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127